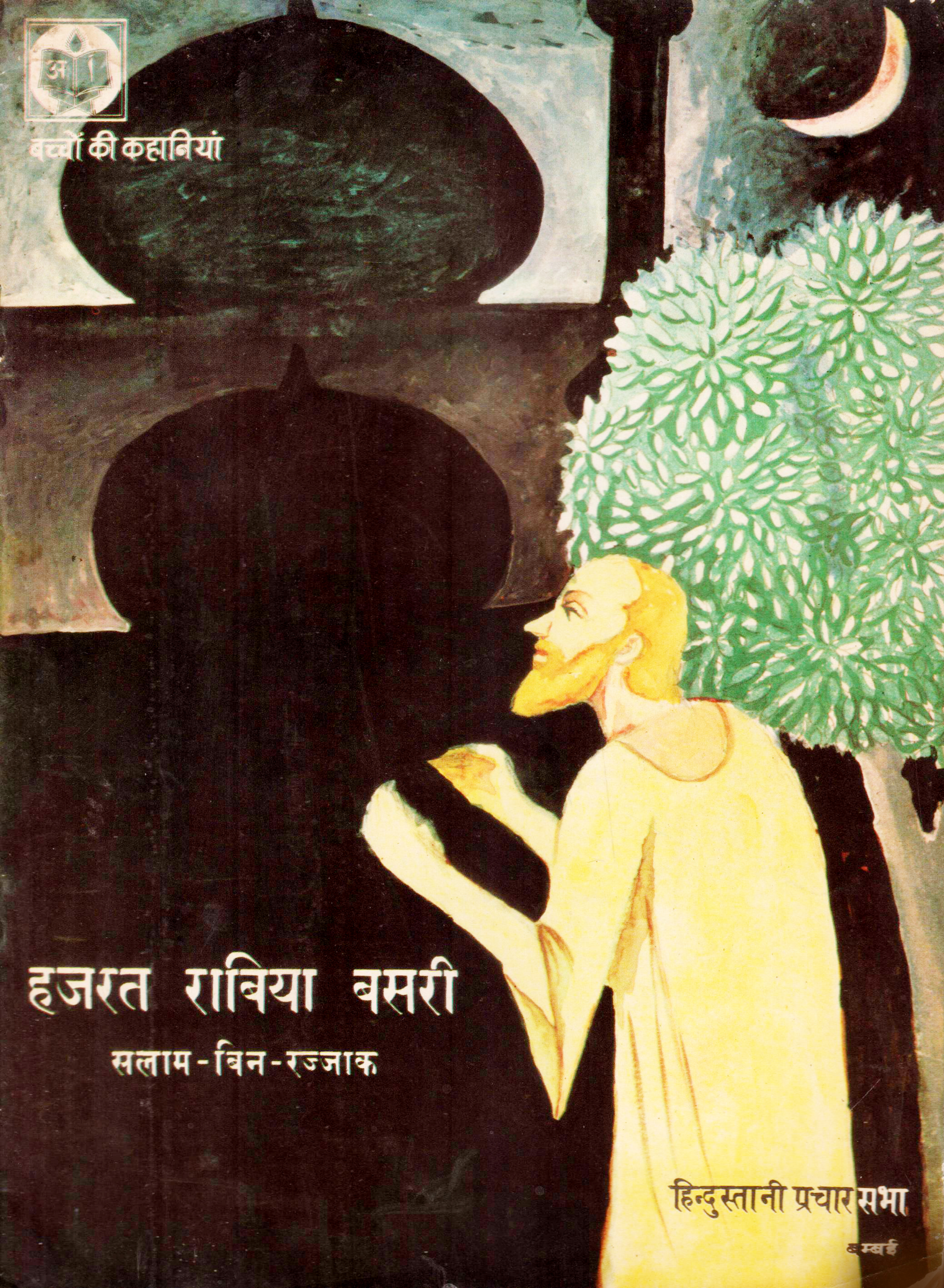


बच्चों की कहानियां

हजरत राबिया बसरी

सलाम-बिन-रज्जाक

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमजोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हकीकत है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुकाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर जोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैगम्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्जत की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफसोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत–पैगम्बरों की जिन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

हजरत राबिआ बसरी

सलाम–बिन–रज्जाक

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

संपादक :

मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :

सतीश पराशर

प्रकाशक

वाडीलाल डगली

मानद मंत्री

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग

७ – नेताजी सुभाष रोड

बंबई–४०० ००२

मुद्रक :

जितेन्द्रभाई ठाकोरभाई देसाई

नवजीवन मुद्रणालय

अहमदाबाद–३८० ०१४

मूल्य :

दो रुपये

हजरत राबिआ बसरी

रात का पिछला पहर है। सर्दी कड़ाके की है। बसरा शहर पर हल्का-हल्का कोहरा छाया हुआ है। लोग अपने-अपने मकानों में आराम से मीठी, गहरी नींद सो रहे हैं। चारों तरफ खामोशी है।

इतने में शहर की बड़ी मस्जिद की मीनार से 'अल्लाहु-अकबर' की प्यारी आवाज सुनायी दी। यह मवज्जन है, जो अजान दे रहा है। अजान की आवाज धीरे-धीरे पूरे शहर में गूंजने लगती है, और फिर मवज्जन की अजान की

आवाज में, हाल ही में पैदा हुई, एक बच्ची के रोने की आवाज भी शामिल हो जाती है ।

बच्ची की मां एक पतली चादर ओढ़े सर्दी से कांप रही है । गरीब बाप एक कोने में बैठा, फिक्रमन्द नजरों से मां और बच्ची को देख रहा है ।

एक छोटा-सा चिराग जल रहा है, जिसकी फीकी रोशनी में छोटी-सी बच्ची का मुट्ठी-भर वजूद कुन्दन की तरह दमक रहा है । अचानक हवा का एक तेज झोंका आता है और चिराग की मद्धिम लौ कांपकर बुझ जाती है ।

मां सर्दी से कंपकंपाती आवाज में कहती है, "प्यारे सरताज, चिराग में शायद तेल खत्म हो गया है । बच्ची के बदन को लपेटने के लिए घर में कोई पुरानी धज्जी भी नहीं है । किसी पड़ोसी से कपड़े का एक टुकड़ा और थोड़ा-सा तेल उधार मांग लाते तो अच्छा था ।"

बाप ने कहा, "बेगम, हमें जो भी मांगना हो, अपने खुदा से मांगें । उसे हर बात की खबर है ।"

मां ने बच्ची के नंगे शरीर को अपनी चादर में छुपाते हुए जवाब दिया, "सरताज, अगर लौटाने की नीयत से उधार मांगा जाए तो उसके लेने में कोई हर्ज है ? बच्ची के शरीर को ढंकने के लिए कहीं से कपड़े का एक टुकड़ा ही ले आइए ।"

बाप मजबूर होकर पड़ोस के मकान पर जाता है । बार-बार दरवाजा खट-खटाने पर भी कोई जवाब नहीं मिलता । मकान के सभी लोग, बल्कि पूरी बस्ती गहरी नींद में डूबी हुई थी ।

थक-हारकर वह वापस लौट आता है ।

इतनी देर में मां और बच्ची नंगे फर्श पर ही गठरी बनकर सो चुके हैं । उन्हें देखकर वह एक ठंडी आह भरता है ।

सुबह की नमाज का वक्त हो गया है । वह नमाज अदा करता है और वहीं सो जाता है ।

उसी रात हजरत मुहम्मद उसके सपने में आते हैं ।

हजरत मुहम्मद उससे बहुत मीठी और मुलायम आवाज में कह रहे हैं, "ऐ

शख्स, दु:खी न हो। तेरी बेटी दुनिया की एक बड़ी औरत होगी। उसका नाम और उसकी नेकी की चर्चा दूर-दूर तक फैलेगी। सुबह उठकर बसरा के हाकिम को एक खत लिखो कि तुम हर जुम्मा की रात को हजरत मुहम्मद को जो तोहफा भेजा करते थे, वह इस रात क्यों नहीं भेजा ? हुजूर का हुक्म है कि इसके बदले मुझे चार सौ दीनारें दे।"

रात का सपना यादकर वह सुबह खुशी से फूला न समाया और हजरत मुहम्मद के हुक्म के मुताबिक बसरा के हाकिम को खत लिखा।

हाकिम खत पढ़कर हैरान रह गया, क्योंकि जुम्मा की रात को वह जो तोहफा भेजा करता था, उसका किसी को पता नहीं था। और यह भी सच था कि वह इस जुम्मा को तोहफा भेजना भूल गया था। उसने उसी वक्त चार सौ दीनारें और कई दूसरे तोहफे उस शख्स की खिदमत में भेजे, और उस बच्ची को देखने के लिए खुद उसके मकान पर हाजिर हुआ।

कौन थी यह बच्ची ?

यह राबिआ बसरी थीं।

राबिआ बसरी अपने मां-बाप की चौथी औलाद थीं। पहले की तीन बहनों के कारण मां-बाप ने आपका नाम राबिआ यानी चौथी रखा। राबिआ बसरी के मां-बाप बहुत नेक और भले थे। वे रात-दिन खुदा की बन्दगी में लगे रहते।

नन्ही राबिआ भी अपने मां-बाप के साथ नमाज पढ़ती, रोजे रखती और खुदा का नाम लेने में लगी रहती। अपनी बहनों या दूसरे पास-पड़ोस के बच्चों के साथ वह कभी किसी खेल में हिस्सा न लेती। उन्होंने न कभी किसी गुड़िया का ब्याह रचा, न कभी किसी के साथ आंख-मिचौली खेली। इस छोटी-सी उम्र में ही वे अक्लमंदी की ऐसी-ऐसी बातें करतीं कि सुननेवाले दंग रह जाते।

राबिआ बसरी अभी नौ-दस वर्ष की थीं कि उनके मां-बाप इस दुनिया से उठ गए। बेचारी चारों लड़कियां अनाथ हो गयीं।



"उन्होंने अपने आपको खुदा के हवाले कर दिया था।"

उन दिनों बसरा में ज़बर्दस्त अकाल पड़ा था । नदी, कुएं, तालाब सूख गए थे । इंसान और जानवर एक-एक बूंद पानी के लिए तरस रहे थे । फसलें सूख गयी थीं । मैदानों में न घास उगती थी, न पेड़ों पर फल लगते थे । जमीन तवे की तरह गर्म और आसमान किसी फौलादी चादर की तरह तप रहा था । ऐसी गर्मी थी कि लोगों के बदन पर फफोले पड़ गए थे ।

उस जमाने में आदमियों को खरीदने और बेचने का चलन था । यह बुरी बात नहीं समझी जाती थी ।

बसरे में भी लोग भूख और प्यास से मजबूर होकर अपने मासूम बच्चों को बेचने लगे । राबिआ बसरी की तीनों बहनें भी भूख से बेहाल थीं । घर में एक दाना अनाज नहीं था । कोई ऐसी चीज भी नहीं थी, जिसे बेचकर उन्हें दो मुट्ठी अनाज मिले । तीनों बहनें भूख से मरणासन्न थीं । मगर राबिआ थीं कि उन पर इस अकाल और भुखमरी का कोई असर नहीं था । होता भी कैसे ? उन्होंने तो अपने आपको खुदा के हवाले कर दिया था । जो अपने आपको खुदा के हवाले कर देता है, उस पर भूख-प्यास का क्या असर होगा ?

राबिआ बसरी का खाना तो बस खुदा की बन्दगी थी । मगर अपनी बहनों की तड़प और बेचैनी उनसे न देखी गयी ।

उन्होंने बहनों से कहा, "आप लोग मुझे किसी सौदागर के हाथ बेच दीजिए । आप लोगों को कुछ पैसे मिल जायेंगे, दो रोटी का बन्दोबस्त हो जायेगा ।"

बहनों ने पहले तो इन्कार किया, मगर जब भूख हद को पार कर गयी तो मजबूर होकर उन सबने मासूम राबिआ को एक पत्थर-दिल सौदागर के हाथों बेच डाला ।

सौदागर राबिआ बसरी को अपने घर ले आया ।

वह राबिआ बसरी से घर के सारे काम करवाता था । बेचारी राबिआ बसरी दिनभर कड़ी मेहनत करतीं, चक्की पीसतीं, कपड़े धोतीं, खाना

पकातीं, घर की सफाई करतीं। मगर इन कामों से जब भी उन्हें छुट्टी मिलती, तुरंत खुदा की बन्दगी में लग जातीं। काम करते-करते भी हमेशा जबान पर खुदा का नाम रहता। दिन में रोजा रखतीं और रात को जब मालिक और उसके घरवाले सो जाते, चुपके से उठकर खुदा की याद में लग जातीं।

एक रात अचानक सौदागर की आंख खुल गयी। उसे किसी के रोने और गिड़गिड़ाने की आवाज सुनाई दी। वह अपने बिस्तर से उठकर बैठ गया। आवाज में ऐसा खिचाव था कि वह उसकी तरफ खिंचता चला गया।

देखता क्या है कि राबिआ बसरी अपनी कोठरी में, सजदे में पड़ी हैं और रो-रोकर खुदा से दुआ मांग रही हैं, "ऐ खुदा! तुझे मालूम है कि मैं रात-दिन तेरी बंदगी करना चाहती हूं। लेकिन दिन को अपने मालिक की सेवा से फुर्सत नहीं मिलती, क्योंकि उसकी खरीदी हुई नौकरानी हूं। रात को उसके सोने के बाद तेरी खिदमत में हाजिर होती हूं और जो कुछ बन्दगी बन आती है, बजा लाती हूं। जानती हूं कि कसूरवार हूं, लेकिन मजबूर और बेबस हूं, क्योंकि तेरा एक बन्दा भी मुझसे खिदमत कराता है।"

राबिआ बसरी रोती-गिड़गिड़ाती अपने खुदा से प्रार्थना कर रही थीं।

उनकी आवाज में ऐसा दर्द था कि सौदागर डर से कांपने लगा। वह डरता-कांपता अपने बिस्तर पर आकर गिर गया। उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। रात उसने बड़ी बेचैनी से काटी।

सुबह उठकर वह राबिआ बसरी के पास आया। उसने अपनी गुस्ताखियों की माफी चाही और इज्जत के साथ उन्हें आजाद कर दिया।

राबिआ बसरी ने उसके लिए दुआ की।

सौदागर ने बड़े अदब से उनसे विनती की, "अगर आप यहां रहना चाहती हों, तो मेरे घर का यह कमरा आपके लिए है। यहां आपको कोई तकलीफ नहीं होगी।"



"ऐ खुदा ! तू सब कुछ देखने और सुननेवाला है।"

राबिआ बसरी ने जवाब दिया, "यहां मेरी बन्दगी में हर्ज होगा। मैं ऐसी जगह रहना चाहती हूं जहां आजादी से अपने खुदा की बन्दगी कर सकूं।"

वे शहर के बाहर एक टूटे-फूटे, मामूली-से मकान में आकर रहने लगीं।

यहां दिन-रात खुदा की याद में गुजारतीं और जो लोग उनसे मिलने आते उन्हें अच्छी-अच्छी बातें बतातीं।

धीरे-धीरे आपका नाम बसरा से निकलकर दूसरी जगहों में फैलने लगा। बड़े-बड़े विद्वान और नामवर लोग आपकी सेवा में आते और आपकी बातों से लाभ उठाते।

और बच्चो, जरा देखो, दुनिया की इस महान भक्त महिला के पास सामान के नाम पर क्या-क्या चीजें थीं——एक टूटा हुआ प्याला, एक पुरानी चटाई बस!

घर में जो भी मेहमान आता, चाहे फकीर हो या बादशाह, उसी चटाई पर बैठता। पास ही एक ईंट रखी थी, जो रात में तकिये का काम देती थी। दो-तीन मामूली से बर्तन थे, जिनमें वे अपने हाथों मामूली-सा खाना पकातीं और खाती थीं।

बसरे का हाकिम आपकी सेवा में आता और आपसे अच्छी-अच्छी बातें सुनता।

एक बार उसने कुछ नौकर आपकी सेवा के लिए भेजे। उन्होंने आपके लिए एक सुन्दर मकान बनाया और मिन्नत करके आपको वहां ले गये।

नये मकान में हर तरह का आराम था। नौकर-चाकर खिदमत में लगे रहते थे। मगर राबिआ बसरी वहां बड़ी मुश्किल से सिर्फ तीन दिन रहीं और चौथे दिन वापस अपनी झोंपड़ी में आ गयीं। नौकरों ने बहुत समझाया, मगर आप लौट कर नहीं गयीं।

चालीस वर्ष तक उसी मामूली-सी झोंपड़ी में खुदा की बंदगी करती रहीं और अपने इल्म से खुदा के बन्दों को लाभ पहुंचाती रहीं। आपका कहना था कि खुदा की बंदगी किसी डर और लालच के बिना करनी चाहिए।



'वे शहर के बाहर एक टूटे-फूटे मामूली से मकान में आकर रहने लगी।"

एक दिन राबिआ बसरी एक हाथ में पानी का लोटा और दूसरे में आग की अंगीठी लिए कहीं जा रही थीं ।

रास्ते में एक शख्स ने पूछा; "यह क्या माजरा है ? आप किधर जा रही हैं ?"

राबिआ बसरी ने कहा, "जन्नत (स्वर्ग) और दोजख (नर्क) की खोज में जा रही हूं । इस पानी से दोजख की आग को बुझाऊंगी और इस आग से जन्नत को जला दूंगी ।"

आदमी ने पूछा, "क्यों ?"

आपने जवाब दिया, "मैं चाहती हूं कि लोग दोजख के भय और जन्नत के लालच से बन्दगी करना छोड़ दें ।"

बच्चो, अरबी भाषा में एक शब्द है तवक्कुल, अर्थात् खुदा पर सच्चे दिल से भरोसा । जो लोग खुदा पर भरोसा करते हैं, खुदा भी उनका खयाल रखता है । राबिआ बसरी तो सिर्फ खुदा पर भरोसा करती थीं ।

एक बार दो नेक आदमी आपसे मिलने आए । बेचारे लम्बे सफर से थके हुए थे और उन्हें भूख भी बहुत लग रही थी ।

हजरत राबिआ के पास उस वक्त दो रोटियां थीं । चाहती थीं कि मेहमानों के सामने रखें कि इतने में दरवाजे पर एक फकीर ने आवाज दी, "ऐ नेक बीबी, फकीर सुबह से भूखा है । खुदा के नाम पर कुछ खाने को दे ।"

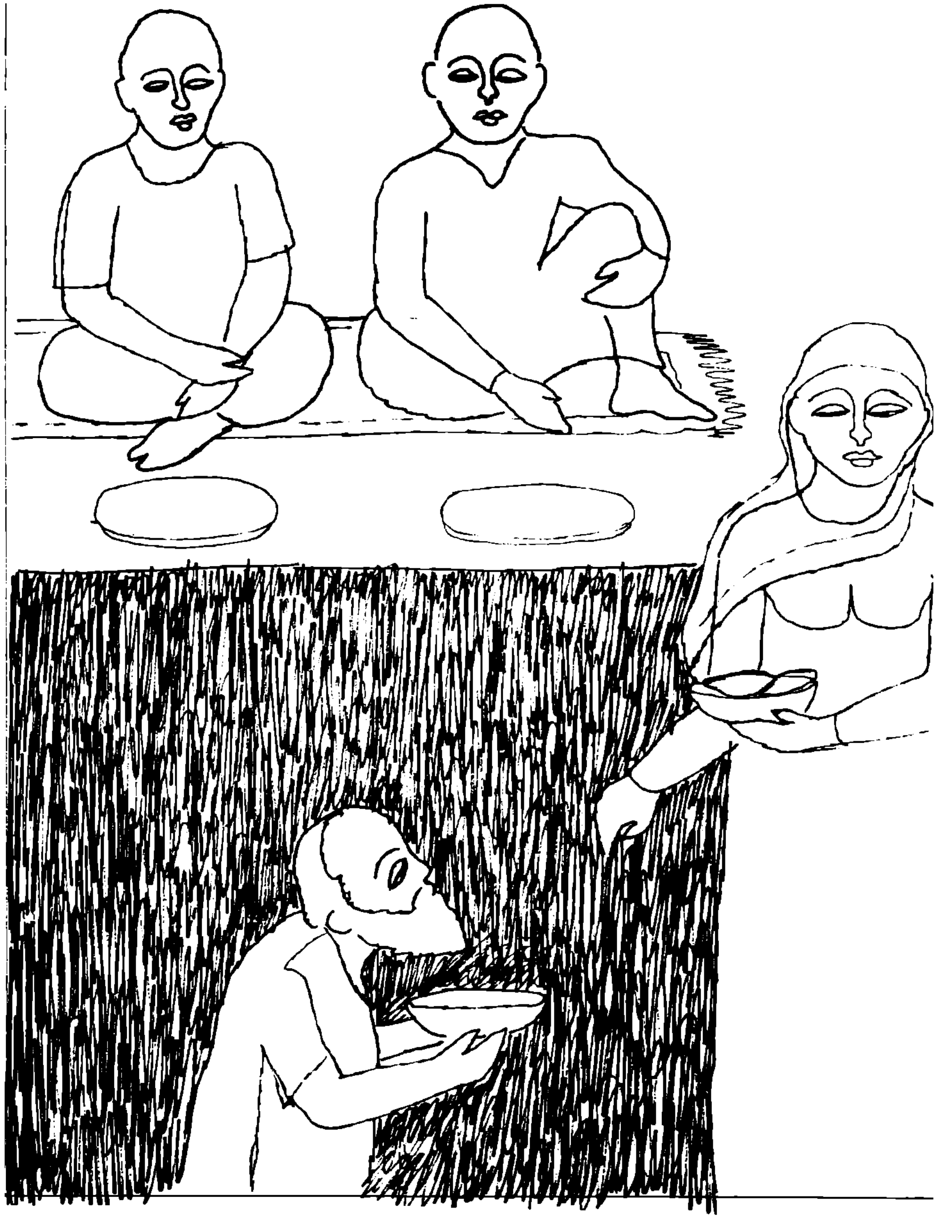
आपने वे दोनों रोटियां फकीर को दे दीं ।

मेहमानों को यह बात बुरी लगी और उनके चेहरे पर नाराजगी झलकने लगी ।

राबिआ बसरी ने मेहमानों के दिल की बात समझ ली ।

बोलीं, "भाइयो, चिन्ता क्यों करते हो ? क्या खुदा हमारा और तुम्हारा हाल नहीं जानता ? वह सबको खाना देनेवाला है ।"

अभी आपकी जबान से ये शब्द पूरे भी नहीं हुए थे कि एक नौकरानी बहुत बड़ा थाल लेकर आयी और बोली, "मेरी मालकिन ने ये रोटियां आपके



"आपने दोनों रोटियां फकीर को दे दीं।"

लिए भेजी हैं ।"

रोटियां लेकर राबिआ बसरी बोलीं, "तुम्हारी मालकिन से रोटियां गिनने में भूल हुई है । जितनी रोटियां वे भेजना चाहती थीं, उनमें दो रोटियां कम हैं ।"

नौकरानी रोटियां लेकर वापस गयी और अपनी मालकिन को सारी बातें बतायीं ।

मालकिन ने कहा, "बेशक, मैं बीस रोटियां देना चाहती थी, मगर भूल से बीस की जगह अठारह रोटियां भेज दीं ।"

उसने पूरी बीस रोटियां फिर भिजवायीं ।

राबिआ बसरी ने वे रोटिया मेहमानों के सामने रख दीं ।

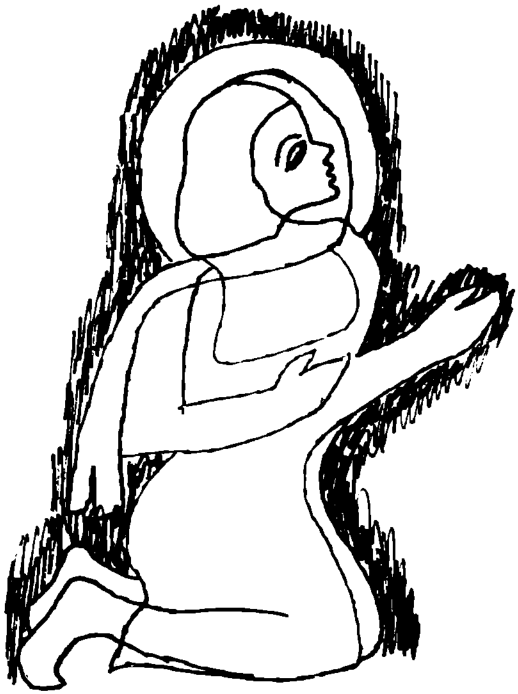
उन्होंने पेट भरकर खाया और हजरत राबिआ से पूछा, "आपको कैसे मालूम हुआ कि दो रोटियां कम हैं ?"

राबिआ बोलीं, "जब मैंने रोटियां फकीर को दीं तब मैंने खुदा से विनती की कि ऐ खुदा, तेरा वादा है कि दुनिया में एक के बदले दस और परलोक में सत्तर देगा । दो रोटियां तेरे नाम से दे रही हूं । अपना वादा पूरा करना, ताकि मैं मेहमानों को पेट भर खाना खिला सकूं । मुझे पूरा भरोसा था कि खुदा ने मेरी मिन्नत सुन ली है । इसलिए जब बीस की जगह अठारह रोटियां आयीं तो मैं समझ गयी कि गिननेवाली से भूल हुई है । इसीलिए मैंने रोटियां वापस कर दीं।

दोनों मेहमान हजरत राबिआ के भरोसे पर हैरान रह गए ।

एक कथा कहती है कि आपने सारी उम्र शादी नहीं की । मगर दूसरी कथा से पता चलता है कि आपने शादी की थी और आपको तीन बेटे भी हुए, जिनके नाम इब्राहीम, मूसा और याहिया थे ।

राबिआ बसरी अपनी उम्र के आखिरी वर्षों में ज्यादा समय खामोश रहती थीं । अगर कभी जरूरी बात करनी ही पड़े, तो केवल कुरान की आयतों (वाक्यों) से अपना मतलब बतातीं । वे कहती थीं कि कुरान के



शब्दों में इसलिए बात करती हूं कि फरिश्ते इंसान की हर बात लिख लेते हैं और जब वे मेरी बातें अपने पास लिखेंगे तो कोई ऐसी बात न लिख सकेंगे जो खुदा ने न कही हो ।

इस नेक औरत की मौत बसरे में हुई । जब आपका आखिरी वक्त करीब आया तो उस जमाने के बड़े-बड़े विद्वान और ज्ञानी आपके पास मौजूद थे ।

आपने उनकी तरफ देखा और कहा, ''आप लोग यहां से चले जायें, क्योंकि अब खुदा से मिलने का वक्त करीब आ गया है । इसमें किसी गैर की मौजूदगी ठीक नहीं ।''

तमाम लोग आपकी आज्ञा पाकर बाहर निकल आये ।

राबिआ बसरी ने कलमा (कुरान) पढ़ा और आंखें बन्द कर लीं ।

कुछ देर बाद सबने एक आवाज सुनी :

''ऐ बन्दे, अपने खुदा की तरफ लौट आ !''

जब दुबारा सब लोग हजरत राबिआ के कमरे में दाखिल हुए, तो देखा कि आपकी रूह शरीर से निकल चुकी है । आपके चेहरे से ऐसी शांति टपकती थी जैसे आप गहरी नींद सो रही हों ।

हजरत राबिआ की मौत की खबर जंगल की आग की तरह चारों तरफ फैल गई । आपके जनाजे में लाखों आदमी थे ।

आपकी मजार बसरे में ही है ।

राबिआ बसरी जिन्दगी में एक मोटे कम्बल का कुरता पहना करती थीं । आपने मौत के समय कहा कि मुझे इसी का कफन देकर दफना देना । लोगों ने वैसा ही किया ।

मौत के कुछ दिन बाद एक नेक औरत ने आपको ख्वाब में देखा कि आप बहुत शानदार कपड़े पहने खड़ी हैं और आपके चेहरे से प्रकाश टपक रहा है ।

औरत ने पूछा, "ऐ राबिआ, कोई ऐसी बात बता जिससे खुदा के नजदीक हुआ जा सके ।"

हजरत राबिआ ने कहा, "खुदा के करीब होने के लिए बन्दगी ही सबसे अच्छा साधन है ।" ●

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी!

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी **चौथी** किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।



हमारे आगामी प्रकाशन

- राजा महाजनक
- संत जलाराम
- कंजूस इल्लीस
- कूरगडु मुनि
- कण देवता
- बक राक्षस का वध
- हनुमान
- स्वामी विवेकानंद
- सुनहरा नेवला
- भाई हो तो भरत जैसा

बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बंबई-४००००२



